विश्व का इतिहास

लेखक

नैथैनियल प्लैट

न्यूटाउन हाई स्कूल, न्यूयार्क सिटी

और

म्यूरियल जीन ड्रमंड

न्यूटाउन हाई स्कूल, न्यूयार्क सिटी

अनुवादक

उदयवीर 'विराज'

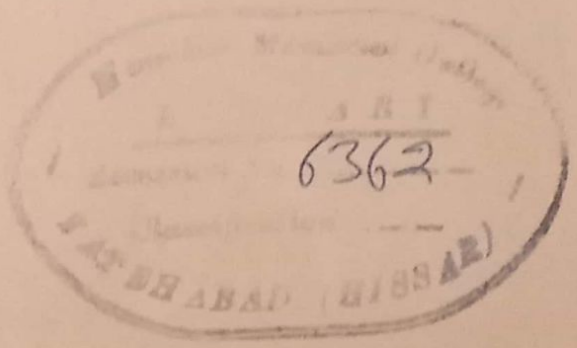

१९६८

यूरेशिया पब्लिशिंग हाउस प्राइवेट लिमिटेड

रामनगर—नई दिल्ली

विषय-सूची

खंड एक : विश्व सभ्यता का जन्म १

अध्याय १. विश्व सभ्यता के अध्ययन से पहले हम अपनी दिशा निश्चित कर लें २

विश्व इतिहास क्या है ? ० विश्व इतिहास के अध्ययन का महत्त्व ० इतिहास के अध्ययन की पद्धतियां ० इतिहासकारों द्वारा स्वीकृत कुछ सत्य ० इतिहासकारों का विशेषज्ञों से परामर्श ० पृथ्वी और उसके निवासियों की एक तालिका तैयार करना ० जंगलीपन से उन्नति की ओर ० आजकल पाये जाने वाले आदिवासी लोग अतीत और वर्तमान के विषय में जानकारी देते हैं ० सभ्यता का आरम्भ लगभग ६००० वर्ष पहले हुआ था ।

अध्याय २. मध्य पूर्व में सभ्यता के विकास-स्थल २५

मिश्र की भौगोलिक स्थिति उसके महत्त्व की कुंजी है ० उसका इतिहास ० परवर्ती सरकारों के लिए महत्त्वपूर्ण शिक्षाएं ० सामाजिक जीवन ० : विशेषाधिकार का प्राधान्य ० आर्थिक जीवन : कठोर नियमन ० सांस्कृतिक जीवन : प्रेरणा-धर्म ० वैज्ञानिक ज्ञान : आधारभूत आवश्यकताओं से प्रेरित हुआ ० बिहिस्तून शिला, मिट्टी की पटियाएं, पत्थरों पर लिखे कानून मैसोपोटामिया के रहस्यों के उद्घाटक हैं ० मैसोपोटामिया की भौगोलिक स्थिति ० मैसोपोटामिया की सभ्यताओं ने अपने से पूर्ववर्ती सभ्यताओं से बहुत कुछ ग्रहण किया, उनके आधार पर वे बनीं और उन्हें नष्ट कर दिया ० हम्मुराबी की संहिता (कोड) में कर्त्तव्यों (जिम्मेदारियों) के साथ-साथ अधिकारों पर भी जोर दिया गया ० मैसोपोटामिया की सभ्यता मूलतः व्यावसायिक सभ्यता थी ० धर्म : लौकिक बातों पर जोर और अत्यधिक प्रभाव ० प्राचीन यहूदियों द्वारा एक ईश्वर की पूजा ० फीनिशियन नाविकों तथा व्यापारियों द्वारा सभ्यता का सारे भूमध्य जगत् में प्रसार ० हिताइतों ने लोहे को पिघाला और लीडिया-वासियों ने मुद्राएं (सिक्के) ढालीं ० व्यवहारनिपुण पारसियों ने साम्राज्य के शासन के लिए सिद्धान्तों की स्थापना की ।

अध्याय ३. सुदूर पूर्व और सुदूर पश्चिम में सभ्यता के विकास-स्थल ५६

भारत का भूगोल : विचित्र विषमताएं ० भारत के इतिहास का सर्वेक्षण ० हिन्दू धर्म और जात-पांत ० बौद्ध धर्म को हिन्दू धर्म की चुनौती ० भारत की कलाएं, विज्ञान, भाषा और साहित्य ० प्राचीन भारत में दैनिक जीवन ० प्राचीन चीन द्वारा एक ऐसी सभ्यता का सृजन, जो कभी नहीं मरी ० चीन का भूगोल और प्राचीन इतिहास ० लाओ त्से ने आनन्द की निष्कर्म खोज का उपदेश दिया ० कनफ्यूशियस ने आनन्द की सक्रिय खोज का उपदेश दिया ० मो ती और मैन्सियस ने मानव के भ्रातृत्व पर बल दिया ० चीनी जीवन का मुख्य आधार : परिवार ० स्त्रियों को हीन समझा जाता था ० चीन के धर्म, लेखन, भाषा, विज्ञान, कला और साहित्य ० कलाओं और विज्ञानों में मय लोगों की प्रगति ० आस्तीक (आज्तेक) लोगों

से मरुस्थल जीवन तथा संस्कृति का विवरण ० इनका नागों द्वारा एक प्रकार के समाजवाद की स्थापना ।

… उन्नति … ८३

खण्ड दो : यूनान और रोम की अपने से पूर्ववर्ती सभ्यताओं के आधार पर उन्नति … ८४

अध्याय ४. सभ्यता यूनान के रास्ते यूरोप पहुँची

ईजियन जगत् आगे बढ़ने के लिए यूनान में रास्ता पार कर गया ० प्राचीन यूनानियों ने नागरिकता और संस्कृति में पूर्णता प्राप्त करने का यत्न किया ० भूगोल का यूनानी जीवन पर प्रबल प्रभाव पड़ा ० स्पार्टा, एक सैनिक राज्य ० एथेन्स ने राजतन्त्र से लोकतन्त्र की ओर प्रगति की ० नागरिकता ने किस प्रकार एथेन्स के लोकतन्त्र को सशक्त बनाया ० पारसी युद्धों (४९२–४७९ ई० पू०) के कारण, घटनाएं और परिणाम ० लोकतन्त्रीय एथेन्स का पेलोपोनेशियन युद्ध (४३१–४०४ ई० पू०) : निर्दोष लोकतन्त्रीय साम्राज्य के सिर पर हुआ ० पांचवीं शताब्दी के एथेन्स में जीविका उपार्जन ० यूनानियों ने अपना ही नाश कर डाला ० स्वस्थ मन और स्वस्थ शरीर के निर्माण के लिए धर्म : यूनानी देवता अतिमानव जैसे थे ० सुकरात ने सत्य की खोज पर जोर दिया ० प्लेटो ने अपने निर्दोष गणतन्त्र की शिक्षा ० अरस्तू के विश्वकोशीय मस्तिष्क ने आनन्द की खोज पर जोर दिया ० योजना बनाई ० प्राचीन यूनानी साहित्य अत्यन्त आधुनिक है ० यूनानी लोग श्रेष्ठ वक्ता और संगीतप्रेमी थे ० यूनान ने विज्ञान के क्षेत्र में अनेक बातें सब से पहले कीं ० यूनानी कला : सादगी और सुन्दरता अपने सर्वोत्तम रूप में ० यूनान का ह्रास क्यों हुआ ० सिकन्दर महान् ने दुनिया के बड़े भाग को जीत लिया ० हेलनी सभ्यता और प्राच्य सभ्यता मिलकर हेलनीय (हेलनिस्टिक) सभ्यता बनी ।

अध्याय ५. सैनिक शक्ति और निपुण प्रबन्ध द्वारा एक रोमन जगत् का निर्माण हुआ. १२३

रोम : एक छोटे से गांव से एक महान् इटली का भूगोल रोम के इतिहास की एक कुंजी ० रोम : एक छोटे से गांव से एक महान् साम्राज्य बना ० प्लीबियनों और पैट्रिशियनों में घोर संघर्ष ० वर्ग संघर्षों का एक-व्यक्तीय शासन में बदलना ० जूलियस सीज़र रोम का अधिनायक बना ० आगस्टस, रोम के प्रथम सम्राट् के रूप में ० रोमन साम्राज्य का पश्चिम में ह्रास ० गणतन्त्र में कुटुम्ब महत्त्वपूर्ण था ० रोमनों ने अपने धर्म का व्यावहारिक रूप में प्रयोग किया ० ईसाइयत ने मुरझाते हुए साम्राज्य में नई जान डाली ० रोम के दार्शनिकों ने भय से मुक्ति को प्रोत्साहन दिया ० रोमनों के आदर्श उनकी शिक्षा-पद्धति में प्रतिबिम्बित हैं ० साहित्य अधिकतर अनुकरणात्मक ० मनोरंजन ने हिंसात्मक रूप धारण कर लिया ० कला और स्थापत्य महान् एवं व्यावहारिक ० विज्ञान प्राचीन ज्ञान का संग्रह ० रोमन कानून आधुनिक जगत् को एक महान् उपहार ० रोम के इतिहास की कुंजियां : भोजन, वस्त्र और मकान ० रोम का वाणिज्य, उद्योग और कृषि भी उसकी कुंजियां हैं ० रोम द्वारा प्राचीन जगत् का समाहार ।

खंड तीन : मध्य युग : सम्राटों, पोपों, पैट्रियार्कों, खलीफाओं, राजाओं और सरदारों का नियंत्रण १६६

अध्याय ६. मध्य युग की दो प्रमुख वस्तुएं : धर्म और साम्राज्य १६७

ईसाई धर्म का मध्ययुगीन यूरोप पर भारी प्रभाव पड़ा ० मुहम्मदी पन्थ का एशिया और

अफ्रीका में प्रसार ० बर्बर लोग साम्राज्यों को तोड़ने और बनाने में सहायक हुए ० बाइज़ेंटाइन साम्राज्य यूनानी और प्राच्य संस्कृतियों को बचाये रहा ० शार्लमैन के साम्राज्य में राज्य और चर्च भागीदार बने ० एक रोमन साम्राज्य का स्वप्न पवित्र रोमन साम्राज्य के रूप में बना रहा ० यूरोप के अन्धकार युग में चीनी साम्राज्य चमके ० मंगोल साम्राज्यों ने सहिष्णुता और आतंक से काम लिया ० मध्य युग के कुछ अन्य साम्राज्य ० मध्य युग के आरम्भ में छोटे-छोटे राज्यों का उदय ।

अध्याय ७. मध्य युग के विभिन्न नियंत्रक समुदायों में टकराव १९९

बड़े साम्राज्यों के टूटने के साथ सामन्त तन्त्र फैला और विभिन्न राष्ट्र निर्बल बने रहे ० अनुचरों (वासालों) और भूमिपति (लॉर्ड्स) के एक-दूसरे के प्रति क्या कर्तव्य थे ० सामन्त तन्त्र (फ्यूडलिज्म) भ्रामक और जटिल ० सामन्त तन्त्र ने सैन्यवाद को आकर्षक रूप में प्रस्तुत किया ० सामन्त भूमिपति : अपनी जागीर का स्वामी ० सामन्ती न्याय अन्याय से भरा ० गढ़ : बढ़िया दुर्ग, निवास की दृष्टि से असुविधाजनक ० गढ़ की कुलीन महिलाएं : शान शौकत तो खूब, पर अधिकार बहुत कम ० सूरमा (नाइटहुड) और शौर्य (शिवलरी) : निस्सार चमक दमक ० मनोरंजन मुख्यतया सैनिक ० जागीर एक छोटा सा संसार ० कृषक दास (सर्फ) का जीवन : कठोर और छोटा ० सामन्त तन्त्र का ह्रास क्यों हुआ ० धर्मयुद्ध (क्रूसेड) : ईसाइयत मुहम्मदी पंथ की टक्कर ० एक लौकिक साम्राज्य का एक धार्मिक शक्ति से संघर्ष : सम्राट् बनाम पोप ।

अध्याय ८. मध्य युग में पुर, व्यापार और संस्कृति २२१

मध्ययुगीन पुरों (टाउन) और व्यापार से प्रगति में वृद्धि हुई ० मध्ययुगीन पुर-जीवन की कठिनाइयां ० पुरों और नगरों के अभ्युदय के कारण ० मध्ययुगीन पुरों का प्रबन्ध कैसे चलता था ० मध्ययुगीन व्यवसायियों की समस्याएं ० मध्ययुगीन श्रेणियां (गिल्ड) : शिल्प और वाणिज्य पर एकाधिकार ० मध्यकालिक मेले : लोग परस्पर मिलते और फलस्वरूप प्रगति होती ० एशियाई व्यापार-पथों पर मुस्लिमों का एकाधिकार ० वेनिस के वणिक् मुख्यतः बिचौलिये ० हान्सीटिक लीग : सशक्त व्यापारिक इजारे ० मध्यकालीन संस्कृति धर्म और सामन्तवाद से प्रभावित ० मध्ययुगीन विश्वविद्यालय और दार्शनिक ० मध्य-युग में विज्ञान की उन्नति और उसमें बाधाएं ० मुद्रणयंत्र से प्रगति की चाल बढ़ी ० दिक्सूचक यंत्र, विश्व-उद्घाटक; बारूद, विश्व-प्रकम्पक ० आधुनिक भाषाएं मध्यकाल में विकसित हुई ० मध्यकालिक वाङ्मय : धार्मिक और रोमानी ० संगीत : भजन और लोकगीत ० कलाकारों ने अपनी प्रतिभा का समन्वय गौथिक कैथेड्रलों (मुख्य गिरजाघर) में किया ।

खंड चार : आधुनिक काल की ओर आने वाले सेतु को पार करना २४७

अध्याय ९. पुनर्जागरण और सुधारणा २४९

पुनर्जागरण ने मनुष्य में, उसकी उपलब्धियों और उसके संसार में रुचि को पुनः जीवित किया ० पुनर्जागरण ने साहित्यिक गुरु कृतियों (मास्टरपीसों) और कलात्मक प्रतिमाओं को जन्म दिया ० पुनर्जागरण ने संसार पर किस प्रकार प्रभाव डाला ० वैज्ञानिक क्रान्ति ने खोज बीन की भावना को बढ़ावा दिया ० वैज्ञानिक पद्धति : सत्यान्वेषण ० कुछ वैज्ञानिकों ने सत्य का अन्वेषण किया और विपत्तियां झेलीं ० आधुनिक चिकित्सा शास्त्र के अग्रगन्ता ०

यूरोप के विस्तार ने व्यापारिक क्रांति को जन्म दिया • व्यापारिक क्रांति ने आधुनिक संसार को बनाने में कैसे सहायता दी • पूंजीवाद का विकास • आरंभिक पूंजीपति ने किस प्रकार उद्योग और कृषि का बदला और शासन को प्रभावित किया • प्रोटेस्टेंट सुधारणा • लूथर ने प्रोटेस्टेंटवाद का सूत्रपात किया • कैथोलिक प्रति सुधार • जैसुइट लोगों ने कैथोलिकवाद का प्रसार किया • सुधारणा में अपने युग का कैसे प्रतिफलन हुआ।

अध्याय १०. स्वेच्छाचारी शासकों का इंग्लैण्ड, फ्रांस और स्पेन में दृढ़ राष्ट्रीय राज्यों का निर्माण करने का यत्न २१२

स्वेच्छाचारी राजाओं ने इंग्लैण्ड में एक दृढ़ राष्ट्रीय राज्य बनाया • नौर्मन विजय ने फ्रान्सीसी और अंग्रेज संस्कृतियों को मिला कर एक कर दिया • हेनरी द्वितीय ने राष्ट्रीय एकता को बढ़ाया और अन्तर्राष्ट्रीय समस्याएं खड़ी हुईं • राजा जौन ने बहुत खोया, पर इंग्लैण्ड ने मैग्नाकार्टा प्राप्त किया • पार्लियामेंट विकसित हुई, क्योंकि ऐडवर्ड प्रथम को धन की आवश्यकता थी शतवर्षीय युद्ध (१३३७–१४५३) में हार ने इंग्लैण्ड को बलवान राष्ट्र बना दिया • राजा की शक्ति ट्यूडरों के शासन में पराकाष्ठा पर पहुंच गई • निरंकुश शासन अंग्रेज लोगों के लिए व्यर्थ रहा • स्वेच्छाचारी राजाओं ने फ्रांस में एक दृढ़ राष्ट्रीय राज्य बनाया • फ्रांसीसी राष्ट्र की नींव पड़ी • जान द आर्क की अन्त: प्रेरणा ने फ्रांसीसी देशभक्ति को बढ़ाया • शतवर्षीय युद्ध का फ्रांस पर प्रभाव • हेनरी चतुर्थ की बुद्धिमत्तापूर्ण नीतियों ने फ्रांसीसी राष्ट्र को दृढ़ किया • कार्डिनल रिशलू और माजारिन ने राजकीय शक्ति को बढ़ाया • निरंकुश शासन फ्रांसीसी लोगों के लिए व्यर्थ रहा • स्वेच्छाचारी राजा स्पेन में कोई बलवान राष्ट्रीय राज्य स्थापित नहीं कर सके • वे नीतियां, जो स्पेन की अवनति की व्याख्या करती हैं, निरंकुश शासन स्पेनी लोगों के लिए व्यर्थ रहा।

अध्याय ११. स्वेच्छाचारी शासकों ने रूस, प्रशिया और आस्ट्रिया में सशक्त राष्ट्रीय राज्य बनाने का यत्न किया ३२१

स्वेच्छाचारी जारों ने रूप में एक ईर्ष्याजीवी स्वेच्छाचार-शाही का निर्माण किया • भूगोल और इतिहास रूस के पृथक् स्वरूप की व्याख्या करने में कैसे सहायता देते हैं • स्वेच्छाचारी पीतर महान् ने रूस का पश्चिमीकरण किया • स्वेच्छाचारिणी कैथराइन महान् ने पीतर के कार्यक्रम का अनुसरण किया • निरंकुशशाही से रूस के लोगों का भला न हुआ • रूस के प्रतिस्पर्धी अठारहवीं सदी में दुर्बल पड़ गये • स्वीडन ने मूल्यवान पाठ पढ़ा • पोलैण्ड हड़पा गया • तुर्की बाहरी कठिनाइयों और भीतरी ह्रास का शिकार • निरंकुश प्रशियाई राजाओं ने स्वेच्छाचारी जर्मनी की नींव डाली • फ्रैडरिक महान् ने प्रशिया को एक सशक्त राष्ट्रीय राज्य बना दिया • निरंकुशशाही से जर्मन लोगों का भला न हुआ • स्वेच्छाचारी आस्ट्रिया में सशक्त राष्ट्रीय राज्य बनाने में असफल रहे • मारिया थैरेसा को बहुत-सी जातियां प्रजा के रूप में दाय में मिलीं और अनेक अन्य जातियों को उसने अपनी प्रजा बनाया • जोसैफ द्वितीय का उपकारी स्वेच्छाचार आवश्यकता से अधिक तीव्रता से आवश्यकता से अधिक दूर तक पहुंच गया • निरंकुशशाही से आस्ट्रिया की जातियों का भला न हुआ • स्वेच्छाचार की बुराइयों ने लोकतन्त्र की अच्छाइयों को चमकाया।

खण्ड पांच : लोकतन्त्र और राष्ट्रीय एकता के लिए संघर्ष ३४२

अध्याय १२. आधुनिक लोकतन्त्र का मार्ग बनाने वाली कुछ क्रान्तियां ३४३

लोकतन्त्र में कानून की आवश्यकता और उद्देश्य • कुछ महत्त्वपूर्ण कानूनी प्रणाली पर विचार • वर्तमान युग से पूर्व के लोकतन्त्र के कुछ उदाहरणों पर विचार • वर्तमान युग के शुरू-शुरू में लोकतन्त्र को प्रोत्साहन • हालैण्ड में निरंकुशतावाद का शिकंजा ढीला पड़ा • चार्ल्स प्रथम को अपनी स्वेच्छाचारी नीतियों की कीमत अपनी जान देकर चुकानी पड़ी • प्यूरिटन क्रान्ति ने अंग्रेजी निरंकुशतावाद को कमजोर करने में सहायता दी • क्रॉमवेल के शासन में कट्टर प्यूरिटन नीतियां • एक स्टुआर्ट राजा के पुन: सत्तारूढ़ होने से कट्टर प्यूरिटन नीतियां समाप्त हुईं • जिद्दी जेम्स द्वितीय इतिहास से शिक्षा लेने को तैयार नहीं होता • १६८८ की शानदार क्रांति ने पार्लियामेंट (संसद्) को स्थायी रूप से सर्वोपरि बना दिया • राजनीतिक दलों और मंत्रिमंडलीय प्रणाली के कारण संसद् की शक्ति में वृद्धि • एक बौद्धिक क्रान्ति अमेरिकी और फ्रांसीसी क्रान्तियों को करवाने में सहायक हुई • अनेकों ने इस बात की पुष्टि की कि विवेक और स्वतन्त्रता के मिलने से ही उन्नति होती है • अमेरिकी क्रान्ति ने स्वतन्त्रता के पक्ष में प्रबल चोट की • उच्च शब्दों और उच्च भावनाओं से उच्च नेतृत्व के लिए रास्ता खुला • संयुक्त राज्य अमेरिका में और उससे बाहर अमेरिकी क्रान्ति का प्रभाव।

अध्याय १३. फ्रांसीसी क्रान्ति से आधुनिक लोकतन्त्र की गति तीव्र हुई ३७३

फ्रांसीसी क्रान्ति ने विशेषाधिकारों पर वज्र प्रहार किया • राजा लुई सोलहवां : अपने पद के लिए गलत आदमी • सम्राज्ञी मारी आन्त्वानैत : राजा के लिए गलत पत्नी • ऐस्तातै जैनेराल का स्थान राष्ट्रीय असेम्बली ने लिया • पेरिस-निवासी पहल करते हैं : बैस्तील नष्ट-भ्रष्ट कर दिया गया • किसानों ने पेरिस-निवासियों का अनुकरण किया : सामन्तीय गढ़ नष्ट कर दिये गये • महिलाएं अपनी शक्ति दिखाती हैं : वार्साइ को प्रयाण • राष्ट्रीय असेम्बली पुरानी व्यवस्था को समाप्त कर देती है • राज-परिवार, सरदारों और पादरी लोगों ने क्रान्ति की निन्दा की • किसान और मध्यमवर्गीय लोग क्रान्ति के परिणाम से संतुष्ट हुए • आमूल-परिवर्तनवादी (रैडिकल्स) और क्रान्ति की मांग करते हैं • हिंसा प्रारंभ होती है : सर्वहारा वर्ग बुर्जुआ लोगों का स्थान लेता है • राष्ट्रीय सम्मेलन (कन्वैंशन) प्रथम फ्रांसीसी गणराज्य की स्थापना करता है • आतंक के राज्य में अभिजातों और क्रान्तिकारियों की हत्या होती है • सम्मेलन के सुधार • डायरैक्टरी (निदेश-परिषद्) फ्रांस पर कुशासन करती है • नैपोलियन फ्रांसीसी क्रान्ति का लाभ उठा कर सैनिक तानाशाही स्थापित कर लेता है • लोकतन्त्र का दिखावा करके वह कौंसल से सम्राट् बना • नैपोलियन की विजयों ने उसे लोकप्रिय बना दिया • नैपोलियन के सुधारों ने उसकी लोकप्रियता में वृद्धि की • नैपोलियन के पतन के कारण • नैपोलियन हार गया और निर्वासित कर दिया गया।

अध्याय १४. लोकतन्त्र के लिए संघर्ष जारी रहा ४०५

प्रतिक्रियावादियों द्वारा पुरानी व्यवस्था को फिर से कायम करने की कोशिश से और भी क्रान्तियां (१८१५–१८४८) भड़कीं • वियैना कांग्रेस ने लोकतन्त्र और राष्ट्रीयता की अवज्ञा की • मैटरनिख-प्रणाली ने स्पेन और इतालवी राज्यों में दृढ़ता दिखाई • लैटिन अमेरिका में मैटरनिख-प्रणाली टूटनी शुरू हुई • मुनरो-सिद्धान्त : एक वायदा और एक चेतावनी • यूनान की स्वतन्त्रता : मैटरनिख-प्रणाली पर एक आघात • फ्रांस और

बेल्जियम में १८३० की क्रान्तियां ० १८४८ की क्रान्तियां : मैटरनिख-प्रणाली टूट गई ० एक क्रान्ति के बाद द्वितीय फ्रांसीसी गणराज्य स्थापित हुआ ० १८४८ में फ्रांस के बाहर क्रान्तियां ० नैपोलियन तृतीय ने अपने चाचा के चरण-चिह्नों पर चलने की कोशिश की (१८४८–१८७०) ० ग्रेट ब्रिटेन में लोकतन्त्र के लिए संघर्ष (लगभग १८००–लगभग १८७०) ० १८०० के आस-पास ब्रिटिश सरकार की लोकतंत्रीय और अलोकतंत्रीय विशेषताएं ० १८३२ के सुधार विधेयक से मध्यम वर्ग को लाभ पहुंचा ० चार्टिस्ट आंदोलन : और अधिक लोग सुविधाओं की मांग करते हैं ० जैफर्सन, जैक्सन और लिंकन : लोकतन्त्र अमेरिका में फलता-फूलता है ० १८७० तक लोकतन्त्र की स्थिति ० सबके लिए शिक्षा का प्रबन्ध ० धार्मिक उत्पीड़न से धार्मिक सहिष्णुता और धार्मिक सहिष्णुता से धार्मिक स्वतन्त्रता की ओर ० नारी अधिकारों के लिए संघर्ष ० अभागों के कल्याण में वृद्धि ० अपराधियों के साथ होने वाले व्यवहार में प्रगति ० लोकतन्त्र के आलोचकों को कुछ उत्तर ।

अध्याय १५. राष्ट्रवाद का तेजी से विकास ४३५

राष्ट्रवाद को उत्तेजित करने वाले बन्धन-सूत्र ० १७८९ से पूर्व राष्ट्रीयता का मन्द विकास ० फ्रांसीसी क्रान्ति का राष्ट्रीयता पर प्रभाव ० संयुक्त राज्य अमेरिका और कनाडा में राष्ट्रीयता ० भूगोल, जनसंख्या के अन्तर और इतिहास ने लैटिन अमेरिकी गणराज्यों को राष्ट्रीय बनाने में योग दिया ० राष्ट्रीयता को विकसित करने वाले लैटिन अमेरिका के अग्रणी नेता ० लैटिन अमेरिका में लोकतन्त्र राष्ट्रीयता से पिछड़ा रहा ० रूस में राष्ट्रीयता का पथरीला मार्ग ० आयर के लोगों का आठ सौ साल तक आजादी के लिए संघर्ष ० इटली के एकीकरण के लिए मैजिनी ने प्रचार किया, कैवूर ने योजना बनाई और गैरीबाल्डी ने संघर्ष किया ० जर्मनी को एक करने के लिए बिस्मार्क ने 'खून और इस्पात' का उपयोग किया ० फ्रांस-प्रशिया युद्ध से जर्मनी और फ्रांस में राष्ट्रवाद मजबूत हुआ ० राष्ट्रीयता ने आस्ट्रियाई और तुर्की साम्राज्य को टुकड़े-टुकड़े कर दिया है ० बड़ी शक्तियों ने बाल्कन राष्ट्रीयता पर असर डाला ० १९१४ से पूर्व तुर्की में राष्ट्रीयता ० जापानी राष्ट्रीयता की जड़ें जापानी सामंत तंत्र में ० बहुत-से एशियाई और अफ्रीकी देशों में राष्ट्रीयता के विकास की मन्द गति ० नये राष्ट्रवाद का रुझान कम लोकतंत्रीय होने की ओर ० राष्ट्रवाद की अच्छाइयां ० राष्ट्रीयता और अन्तर्राष्ट्रीयता साथ-साथ रहती हैं ।

खण्ड छह: औद्योगिक क्रान्ति और साम्राज्यवाद ४७१

अध्याय १६. औद्योगिक क्रान्ति : पुरानी और नई ४७३

औद्योगिक क्रान्ति के कारण ० आविष्कारों से वस्त्र-उद्योग में क्रान्तिकारी परिवर्तन ० विनिर्माण में वाष्प-शक्ति, लोहा, कोयला और इस्पात सहायक ० मार्ग निर्माण में क्रान्ति ० नहरों की सनक ० स्टीम बोट, लोहे के बने जलयान और लकड़ी के बने द्रुतगामी क्लिपर जहाज ० भाप के इंजिन लोहे की पटरियों पर ० मोटरगाड़ियों और विमानों ने दूरियों को मिटा दिया ० डाक वितरण में क्रान्ति ० विद्युत् को उपयोगी बनाया गया ० दूरलेख (तार) और दूरभाष (टेलीफोन) यंत्रों में विद्युत् का प्रयोग होने लगा ० बेतार, रेडियो और टेलीविजन ० अखबारों ने दुनिया को हमारे द्वार पर ला खड़ा किया ० पुरानी कृषि-क्रान्ति शुरू हुई ० पुरानी कृषि-क्रान्ति के अग्रगामी ० अहाता (ऐन्क्लोजर) कानूनों से अंग्रेज किसान अपने खेत छोड़ने को बाध्य हुए ० मैकॉर्मिक के फसलकाट यंत्र से पुरानी कृषि-क्रान्ति की गति तीव्र हुई ० औद्योगिक क्रान्ति और कृषि-क्रान्ति का यूरोप में, उत्तरी तथा दक्षिणी अमेरिका में और सुदूर पूर्व में विस्तार ० औद्योगिक क्रान्ति का मेरुदंड : कारखाना पद्धति ० प्रारम्भिक कारखानों में बुरी दशाएं ० नई औद्योगिक और कृषि-क्रान्तियों की कुछ मुख्य बातें ।

अध्याय १७. औद्योगिक क्रान्ति ने संसार को किस प्रकार प्रभावित किया है ४९७

उद्योग के नेताओं ने अपने कारखानों का स्वामित्व और प्रबन्ध अपने हाथ में रखा ० व्यवसाय और विशाल हुआ ० अबन्ध-नीति के समर्थकों ने सरकारी नियमन का विरोध किया ० औद्योगिक क्रान्ति से पहले और उसके बाद सरकारी नियमन ० समाजवादियों ने सरकारी स्वामित्व के लिए दबाव डाला ० यूटोपियाई समाजवादियों ने सहकारी समाजों की योजना बनाई ० मार्क्सवादी समाजवाद और उसकी आलोचनाएं ० अन्य आमूलपरिवर्तनवादी आन्दोलन ० एक नगर सभ्यता का विकास ० जनसंख्या वृद्धि के परिणामस्वरूप उत्पन्न समस्याएं ० सामाजिक वर्गों पर प्रभाव ० मानकीकरण, फिर भी विविधता ० पारिवारिक जीवन बदला और रहन-सहन का स्तर ऊंचा हुआ ० औद्योगिक क्रान्ति के कुछ राजनीतिक और आर्थिक प्रभाव ० समय-समय की श्रम-पद्धतियों का एक सर्वेक्षण ० आधुनिक काल में स्वतंत्र श्रम-पद्धति का विकास हुआ ।

अध्याय १८. साम्राज्यवाद : पुराना और नया ५१७

साम्राज्यों के उत्थान के और पतन के कारणों का उदाहरणों द्वारा स्पष्टीकरण ० आधुनिक काल के शुरू के दिनों के औपनिवेशिक साम्राज्य ० ब्रिटिश साम्राज्य ने स्पेनी और डच साम्राज्यों को पराजित किया ० ब्रिटिश साम्राज्य ने फ्रांसीसी साम्राज्य को पराजित कर दिया ० सिपाही विद्रोह ने ब्रिटिश साम्राज्य को एक सबक सिखाया ० ब्रिटिश साम्राज्य का बढ़ना जारी रहा ० उन्नीसवीं सदी के आरम्भ में साम्राज्य-निर्माण में ह्रास होने लगा ० उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में साम्राज्य-निर्माण फिर उभरा ० नये साम्राज्यवाद के कारण ० अल्पविकसित क्षेत्रों को प्राप्त करने और उन पर नियंत्रण रखने के उपाय ० सुदूर पूर्व और प्रशान्त, अफ्रीका और मध्य पूर्व में नये साम्राज्यवाद ने पांव पसारे ० उत्तरी और दक्षिणी अमेरिका में विस्तार ० ब्रिटिश साम्राज्य सारे इतिहास में सबसे बड़ा साम्राज्य ० रूसी साम्राज्य का सागरों और महासागरों की ओर विस्तार ० जापान ने यूरोपीय साम्राज्यवादियों का अनुकरण किया ० फ्रांस ने एक साम्राज्य खोया, लेकिन एक और साम्राज्य का निर्माण कर लिया ० साम्राज्य-निर्माण के क्षेत्र में इटली और जर्मनी बाद में आये ० कुछ अपेक्षाकृत छोटे राष्ट्रों के साम्राज्य ० कैरिबियन समुद्र और प्रशांत महासागर में विस्तार ० साम्राज्यवाद का महत्त्व ।

अध्याय १९. एक विस्तारशील औद्योगिक युग में हमारा संसार ५४९

१८७०-१९१४ : ब्रिटिश इतिहास का एक उज्ज्वल पृष्ठ ० ब्रिटेन में राज शासकों का और शासन जनता का ० १९११ का पार्लियामेंट अधिनियम: हाउस ऑफ कामन्स की शक्ति बढ़ी० ब्रिटेन और संयुक्त राज्य अमेरिका की सरकारों की तुलना ० ब्रिटेन के कुछ प्रधान मंत्री, उनके दल और नीतियां ० ब्रिटेन की दमक घटनी शुरू हुई ० १८७१-१९१४ : तृतीय फ्रांसीसी गणराज्य की अपने शत्रुओं पर विजय ० पारी (पैरिस) कम्यून संयुक्त फ्रांस के लिए एक खतरा ० राजतंत्रीय झगड़ों का परिणाम तृतीय गणराज्य ० तृतीय गणराज्य की सरकार में लोकतन्त्र की स्थिति ० तृतीय गणराज्य को सुदृढ़ बनाने के लिए उठाये गये कदम ० १८७०-

१९१४ : बड़े संयुक्त इटली के सामने अनेक समस्याएं ० १८७१–१९१४ : जर्मन साम्राज्य लोकतन्त्रीय ढांचे में निरंकुश ० रूस का दीर्घकालीन निरंकुशवाद १८७० के बाद भी जारी रहा ० १८५०–१९१४ : [illegible] ० चीन में [illegible] महान् परि- [illegible] १८७०–१९१४ [illegible] ० संयुक्त राज्य अमेरिका [illegible] [illegible] ५७९

खण्ड सात : कुछ शान्तिपूर्ण प्रगति का लेखा-जोखा ५८०

अध्याय २०. रेनेसांस के बाद से कला और विज्ञान . . . .
अधिकारवाद : [illegible] तर्क पर और [illegible] पर जोर ० यथार्थवाद ० [illegible] (रोमांटिसिज्म) : स्वतन्त्रता, संवेग और [illegible] विषयों पर जोर ० उत्तरी अमेरिका और [illegible] अमेरिका में कला, साहित्य और संगीत की प्रधान घटनाएं ० [illegible] में हुई प्रगति ० हार्वे, अठारहवीं [illegible] में एक [illegible] ० वैज्ञानिक क्रान्ति के बाद से विज्ञान में हुई प्रगति ० जेनर ने [illegible] का आविष्कार करके करोड़ों लोगों के प्राण बचाये ० पाश्चर ने रोगों के कीटाणु सिद्धान्त की स्थापना की ० लिस्टर ने पूतिरोधक (एंटिसेप्टिक) शल्य-चिकित्सा का [illegible] किया ० रोगों के विरुद्ध युद्ध के अन्य वीर योद्धा ० [illegible] सदी की [illegible] वैज्ञानिक प्रगति ० डार्विन ने अपना विकासवाद का सिद्धान्त प्रस्तुत किया ० मेंडल ने डार्विन के सिद्धान्त को सुधारा ० अन्वेषकों ने विज्ञान को आगे बढ़ाया ० डाल्टन ने परमाणु युग के लिए द्वार खोल दिया ० परमाणु युग : एक आशा और आशंका, दोनों ही । ६०२

अध्याय २१. १९१४ तक शान्ति आन्दोलन . . . .
युद्ध के खर्च ० युद्धों के कारण ० आधुनिक काल से पहले प्रतिद्वंद्वी देशों के मध्य हुए कुछ युद्ध ० आधुनिक काल में प्रतिद्वंद्वी देशों के मध्य हुए कुछ युद्ध ० देशों के अन्दर ही हुए कुछ युद्ध ० आधुनिक काल से पहले शान्ति आन्दोलन ० आधुनिक काल के शान्ति आन्दोलन ० अन्तर्राष्ट्रीय कानून के कुछ सामान्य सिद्धान्त ० अन्तर्राष्ट्रीय कानून के कुछ युद्धकालीन सिद्धान्त ।

खण्ड आठ : १९१४ से १९४५ तक : प्रथम विश्वयुद्ध से लेकर द्वितीय विश्वयुद्ध के अन्त तक ६११

अध्याय २२. प्रथम विश्वयुद्ध, जो अतीत की बुराइयों के फलस्वरूप हुआ और जिसने कुछ नई बुराइयों को जन्म दिया । ६१२
प्रथम विश्वयुद्ध के मूल कारण ० एक संकट से दूसरे संकट तक पहुंचते हुए सारजेवो के संकट तक ० सारजेवो संकट से शृंखला प्रतिक्रिया शुरू हुई ० प्रथम विश्वयुद्ध : बचाव, देर तक डटे रहने की क्षमता और हमलों पर जोर ० देर तक डटे रहने की क्षमता नियंत्रणों, घेरा-

बन्दियों और पनडुब्बियों द्वारा बढ़ाई गई ० देर तक डटे रहने की क्षमता [illegible] बढ़ाई गई ० [illegible] से केन्द्रीय शक्तियों की विजय ० परन्तु संधित राष्ट्रों की देर तक डटे रहने की क्षमता अधिक थी ० जर्मनी ने [illegible] को भारी क्षति पहुंचाई ० १९१७ : संधित राष्ट्रों के लिए मुख्यतः [illegible] वर्ष ० युद्ध में संयुक्त राज्य अमेरिका के प्रवेश से संधित राष्ट्रों का [illegible] वर्ष [illegible] हो उठा ० संधित राष्ट्रों ने केन्द्रीय राष्ट्रों को पराजित कर दिया ० पारि (पेरिस) का शान्ति समझौता : [illegible] की वास्तविकताओं से टकराव ० प्रथम विश्वयुद्ध के परिणाम : संसार को बहुत क्षति पहुंची और वह बहुत बदल गया ० दो विश्वयुद्धों के बीच (१९१९ से १९३९ तक) शान्ति आन्दोलन ० राष्ट्रसंघ (लीग ऑफ नेशन्स) पर बड़ी शक्तियों का प्रबल प्रभाव ० राष्ट्रसंघ ने सामाजिक तथा आर्थिक समस्याओं की ओर राजनीतिक विवादों को निपटाया ० राष्ट्रसंघ की असफलता में कुछ बाधाएं ० सुरक्षा की वृद्धि के लिए संधय (निषेधात्मक संधियां), शान्ति करार और निःशस्त्री-करण ।

अध्याय २३. दो युद्धों के बीच के दिनों के प्रमुख अधिनायक तन्त्र ६३७
रूस में रोमानोफ निरंकुश तंत्र का स्थान एक साम्यवादी अधिनायक तंत्र ने ले लिया ० साम्यवाद का [illegible] ० नई आर्थिक नीति : साम्यवाद से प्रत्यावर्तन ० सोवियत (पंचायती) समाजवादी गणराज्यों का संघ स्थापित हुआ ० लेनिन की मृत्यु और बागडोर स्तालिन के हाथ में ० पंचवर्षीय योजनाओं ने रूस की औद्योगिक तथा कृषि क्रान्तियों की चाल तेज की ० सोवियत रूस की सरकार : कागज पर और व्यवहार में ० सोवियत रूस की विदेश-नीति : यह बदलती है, फिर भी बहुत कुछ ज्यों की त्यों रहती है ० सोवियत रूस में शिक्षा, धर्म और स्त्रियों की स्थिति ० मुसोलिनी की कुछ परम्परा तथा विदेश-नीतियां ० हिटलर ने जर्मनी में वाइमर गणराज्य के स्थान पर एक फासिस्ट अधिनायक तन्त्र स्थापित किया ० आतंक नात्सी अधिनायक तंत्र का एक साधन ० राजनीतिक, आर्थिक तथा सामाजिक जीवन का पूर्ण नियंत्रण ० हिटलर की विदेशनीति ।

अध्याय २४. दो युद्धों के बीच के दिनों में विश्व की सामान्य स्थिति ६६१
संयुक्त राज्य अमेरिका की मन्दी और आक्रमण का भय उत्पन्न हुआ ० संयुक्त राज्य अमेरिका की विदेशनीति (१९१९–१९३९) : विच्छिन्नतावादी और अन्तर्राष्ट्रीयतावादी, दोनों ० संयुक्त राज्य अमेरिका और कनाडा : अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग का सर्वोत्तम रूप ० संयुक्त राज्य अमेरिका और लैटिन अमेरिका : भले पड़ोसियों की नीति को बढ़ावा दिया गया ० लैटिन अमेरिका ने अपेक्षाकृत अच्छे जीवन के लिए यत्न किया ० लैटिन अमेरिका के कुछ गणराज्यों ने फासिस्ट, समाजवादी और लोकतंत्रीय विचार दूसरों से लिये ० ग्रेट ब्रिटेन को बहुत कठिन समय देखना पड़ा ० सुरक्षा के लिए फ्रांस का संघर्ष विफल रहा ० लोकतंत्रीय, समृद्ध चैकोस्लोवाकिया ने भरसक प्रयत्न किया ० नवरचित पोलैण्ड आन्तरिक और बाहरी एकदलीय शासन के सम्मुख झुक गया ० युद्धोत्तर आस्ट्रिया का अन्त लगभग उसके जन्म-काल से ही सुनिश्चित था ० युद्धोत्तर हंगरी : लोकतन्त्र से समाजवाद की, और समाजवाद से फासिस्टवाद की ओर ० बाल्कन राष्ट्र : पांच छोटे-छोटे देश, जिनकी समस्याएं बड़ी बड़ी थीं ० दो युद्धों के बीच के दिनों में स्पेन : राजतंत्र, गणराज्य, फासिस्ट अधिनायकतंत्र ० मध्यपूर्व : राष्ट्रीयता और साम्राज्यवाद सक्रिय ० भारत में गांधी जी ने निष्क्रिय प्रतिरोध द्वारा अंग्रेजी साम्राज्य को चुनौती दी ० चीन : राष्ट्रीय फूट ने जापानी साम्राज्य-वाद को आमन्त्रित किया ० जापान : सैन्यवादी राष्ट्रवाद से प्रेरित साम्राज्यवाद ।

अध्याय २५. **दूसरा विश्वयुद्ध : अतीत की बुराइयों की उपज** ७१३
दूसरे विश्वयुद्ध के आधारभूत कारण ० एक संकट से दूसरे संकट तक होते हुए पोलैंड के संकट तक ० दूसरे विश्वयुद्ध का आरम्भ तड़ित्गति युद्ध से हुआ ० पोल लोगों पर हिटलर का अत्याचार ० सोवियत रूस ने अपनी बाड़ बनाई ० हिटलर ने अधिकांश यूरोप पर अधिकार कर लिया ० जापान ने संयुक्त राज्य अमेरिका को युद्ध में घसीट लिया ० संयुक्त राज्य अमेरिका 'लोकतन्त्र का शस्त्रागार' बन गया ० संयुक्त राज्य अमेरिका ने चीन का सौदा करने से इन्कार कर दिया ० १९४२ के आरम्भिक दिन : धुरी राष्ट्र सफलता के शिखर पर ० उत्तरी अफ्रीका में मित्र सेनाओं ने नाजियों को हरा दिया ० संयुक्त राष्ट्रों ने यूरोप के कोमल उदरभाग (इटली) को कठोर पाया ० नाजी प्रलय शक्ति को स्तालिनग्राड में रोक दिया गया ० डी-दिवस की चढ़ाई : सम्पूर्ण इतिहास का महत्तम सैनिक करतब ० संयुक्त राष्ट्रों की सीगफ्रिड लाइन की ओर प्रगति ० संयुक्त राष्ट्रों ने नाजियों को सब मोर्चों पर लड़ कर हरा दिया ० अमेरिकी सैनिकों की एक द्वीप से दूसरे द्वीप तक कुदानों ने जापानियों को वापस अपने द्वीपों तक खदेड़ दिया ० जापान ने विनाश को सम्मुख देख कर आत्मसमर्पण कर दिया ० दूसरा विश्वयुद्ध : विश्वव्यापी और पूर्ण तथा खर्च, हताहतों और क्रूरताओं की दृष्टि से बड़ा ० दूसरे विश्वयुद्ध में विज्ञान : भविष्य का एक संकेत ।

खण्ड नौ : हमारा युग ७२४

अध्याय २६. **युद्ध काल में संयुक्त राष्ट्रों ने शान्ति की योजना बनाई.** ७२६
संसार को अधिक सुखी बनाने के लक्ष्य : चार स्वतन्त्रताएं : अतलांतक घोषणा-पत्र ० पुनर्वास सहायता—संयुक्त राष्ट्र सहायता और पुनर्वास प्रशासन, विश्व बैंक, अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष ० युद्धकालीन सम्मेलन—मास्को, काहिरा, तेहरान, याल्टा, पोट्सडम ० कुछ शान्ति-संधियों में हुए समझौते ० राष्ट्रों ने संयुक्त रूप से 'संयुक्त राष्ट्र-संघ' नामक संगठन की स्थापना की ० सुरक्षा परिषद्—शान्ति बनाये रखने का बड़े राष्ट्रों का दायित्व ० महासभा की शक्ति में उत्तरोत्तर वृद्धि ० विश्व न्यायालय—जहां राष्ट्र अपने विवादों को ले जा सकते हैं ० न्यास-परिषद्—आर्थिक और सामाजिक परिषद् के लक्ष्य ० युद्ध के मूलभूत कारण ० सचिवालय—संयुक्त राष्ट्र-संघ का दिन-प्रति-दिन का कार्य ० कुछ समस्याएं जिन्हें राष्ट्र-संघ ने सुलझाया ।

अध्याय २७. **शान्तिकाल में शीत युद्ध छिड़ गया.** ७३९
शीत युद्ध द्वारा विभाजित विश्व ० शीत युद्ध ने संयुक्त राष्ट्र-संघ को विभाजित कर दिया ० शीत युद्ध से निरस्त्रीकरण में कठिनाई ० शीत युद्ध से जर्मनी विभाजित बना रहा ० बर्लिन विमान-वहन से बर्लिन की घेराबन्दी टूटी ० विभाजित जर्मनी की दो सरकारें ० शीत युद्ध ने आस्ट्रिया को १० वर्षों तक विभाजित रखा ० संयुक्त राज्य अमेरिका ने रूसी साम्यवाद को रोकने और विश्व के आर्थिक पुनरुज्जीवन में सहायता देने का यत्न किया ० ट्रूमैन सिद्धान्त ने तुर्की और ग्रीस को सहारा दिया ० पूंजीवादी संयुक्त राज्य अमेरिका ने साम्यवादी टीटो को सहायता दी ० मार्शल योजना और 'चतुःसूत्री' (पोइन्ट फोर) कार्यक्रम ० सैनिक सहायता पर अधिक बल ० एकता को बढ़ाने और साम्यवाद को रोकने के लिए संधियां : 'नाटो', 'सीटो', 'मीटो' (सैन्टो), रियो ० यूरोप की 'यूरोपीय संयुक्त राज्य' की ओर प्रगति ० शूमां योजना, यूरोप के व्यापार गुट और यूरैटोम ० शीत युद्ध के कुछ संश्रित राष्ट्रों ने बहुत प्रगति की ० लेकिन कुछ गम्भीर समस्याएं अब भी बाकी हैं ० कनाडा और अमेरिका का सहयोग, कुछ मतभेदों के बावजूद, सुदृढ़ रहा ० चीनी साम्यवादियों ने चीन को जीता ० कोरिया में शीत-युद्ध वास्तविक युद्ध बन गया ० पराजित जापान पर अधिकार किया गया और नये नमूने पर उसका निर्माण हुआ ० सोवियत संघ ने शीत युद्ध में नया दृष्टिकोण अपनाया ० रूस के नये दृष्टिकोण में बहुत कुछ पुराना दृष्टिकोण विद्यमान रहा ।

अध्याय २८. **हमारे युग में एशिया, अफ्रीका, मध्य पूर्व और लैटिन अमेरिका की स्थिति** ७७३
एशियावासियों की मांग कि एशिया एशियाइयों के लिए ० स्वाधीन इण्डोनेशिया को अपने तीन हजार द्वीपों के शासन में कठिनाई ० कम्युनिस्टों का उत्तर वियतनाम पर अधिकार और लाओस, कम्बोडिया तथा दक्षिण वियतनाम को खतरा ० स्वाधीन फिलिपाइन्स के अमेरिका के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध बने रहे ० स्वाधीन बर्मा द्वारा अर्थ-व्यवस्था और शीत-युद्ध में संतुलन की खोज ० भारत तथा पाकिस्तान को समझ आ गया कि स्वाधीनता ही सब रोगों का इलाज नहीं ० ब्रिटेन ने मलाया को स्वाधीनता और सिंगापुर को स्वशासन प्रदान किया ० स्वाधीन इज़राइल : यहूदियों का सदियों पुराना स्वप्न सत्य हुआ ० कम्युनिस्ट चीन ने रूसी तौर-तरीके अपनाये और बरते ० अफ्रीका अफ्रीकावासियों का—अफ्रीकियों की मांग ० घाना : द्वितीय युद्धोपरान्त का एक अग्रणी अफ्रीकी राष्ट्र ० माउ माउ द्वारा अनेकों का संहार : ब्रिटेन ने उसका उत्तर तोपों, फांसियों तथा कुछ स्वशासनाधिकार द्वारा दिया ० रोडेशिया और न्यासालैण्ड का संघ ० : "सभी सुसभ्य लोगों को समानाधिकार" का वचन ० दक्षिण अफ्रीका : बारूद का पीपा ० अल्जीरियाई संकट ने फ्रांस और उसके शीत युद्ध के मित्रों को झकझोर दिया ० कांगो : स्वाधीनता के बाद गृहयुद्ध का खतरा ० मध्य-पूर्व : अफ्रीका, एशिया और यूरोप के मिलन-स्थल पर राष्ट्रवाद धधक उठा ० अरब राष्ट्रों के साथ संघर्ष बना रहने के कारण इज़राइल का पश्चिम की ओर तेजी से बढ़ाव ० लैटिन अमेरिका : तेजी से औद्योगीकरण, लेकिन अधिकांश का रहन-सहन का स्तर निम्न बना रहा ० क्यूबा के कैस्ट्रो ने रूस-समर्थक और अमेरिका-विरोधी दृष्टिकोण अपनाया ० भविष्य : 'शांति और प्रगति का एक स्वर्ण युग' ० मानव द्वारा अन्तरिक्ष के अन्वेषण से भविष्य पर क्या प्रभाव पड़ेगा ?